International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 92-95

महात्मा बुद्ध का शांति, कर्म प्रधान और मानवतावादी चिंतन की प्रासंगिकता: वर्तमान संदर्भ में

डॉ0 तृप्ति शर्मा

सहायक प्रोफेसर, हिंदू गर्ल्स कॉलेज, सोनिपत, हरियाणा, भारत

प्रस्तावना

धर्मक्षेत्रो कुरुक्षेत्रो समवेता युयुत्सव:।
मामका: पाण्डवाष्चैव किमकुर्वत् संजय।।[1]

विश्वगुरु की पदवी को प्राप्त भारत देश ने वर्षों तक बाहरी ताकतों के दंश को सहन किया है। प्रकृति की गोद में शरण लेने वाला देश सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से इतना मजबूत रहा है कि जिसको विभिन्न आततायियों द्वारा किए जाने वाले प्रहारों को भोगा और उसको फिर भी अपने को टूटने—बिखरने नहीं दिया। हमारी संस्कृति विशाल है, जिसको आज तक कोई छिन्न—भिन्न नहीं कर पाया। क्या हमने कभी इसका कारण खोजने की चेष्टा की है? मैं इसका कारण भगवद्कृपा को मानती हूँ क्योंकि उन्हीं की कृपा से समय—समय पर इस पावन—पवित्र धरा पर महापुरुष, संत—महात्माओं ने जन्म लिया है जिनकी असीम कृपा से हम स्वच्छंद हो स्वतंत्र वातावरण में श्वास ले रहे हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने स्वयं अपने मुखरविन्द से अर्जुन को गीता का उपदेश देते हुए कहा है कि

यदा—यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यअहम् ।[2]

कहने का अभिप्राय यह है कि भारत को विभिन्न प्रकार की समस्याओं व दुराचारों को दूर करने के लिए भगवान् किसी न किसी रूप में स्वयं अवतरित होते हैं और समाज के समक्ष एक आदर्श स्थापित करते हैं। वह निर्भर करता है देश, काल व परिस्थिति पर अर्थात् तात्कालिक परिवेश को क्या चाहिए? 500 से 600 ई. पूर्व समाज कुछ ऐसी ही परिस्थितियों से घिरा हुआ था। तत्कालीन समय में लुम्बिनी वन में कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन के गृह भगवान बुद्ध का आविर्भाव हुआ।
आज का युग आधुनिक युग के नाम से जाना जाता है। इस आधुनिक युग ने मानवी समाज को कई जीवन मूल्य दिए हैं, नई प्रेरणा दी है, नई चेतना दी है, नए आदर्श दिए हैं, नई सोच दी है और मानवी जीवन की ओर देखने का नया दृष्टिकोण दिया है। इसलिए इस आधुनिक युग को कई दृष्टि से बड़ा महत्व प्राप्त हुआ है। आधुनिक युग ज्ञान और विज्ञान का युग है। आधुनिक युग लोकतंत्र, समाजवाद, सामाजिक—न्याय, मानवी—स्वतंत्रता, मित्रभाव, समान अवसर की प्राप्ति, नारी—पुरुष समानता और मानवी संवेदनशीलता का युग है। उसी प्रकार आधुनिक—युग लिंग की विषमता, वंश की विषमता, वर्णवाद की विषमता, जातिवाद की विषमता, स्पर्शवाद, सामंतवाद आदि के विरुद्ध संघर्ष का युग है। आज का युग वास्तव में सामाजिक परिवर्तन का वैचारिक—क्रांति का, सामाजिक क्रांति का और युगों से उपेक्षित, प्रताड़ित, शोषित, सर्वहारा समाजों के उत्थान का युग है।
आधुनिक युग में जब हम आज से तीन हजार साल पहले हुए तथागत भगवान बुद्ध के बारे में सोचते हैं और उनके द्वारा 'धम्म' के बारे में, उनके तत्व विचारों के बारे में, उनके दर्शन—चिंतन के बारे में सोचते हैं, तब हमें लगता है कि भगवान बुद्ध ने जो उपदेश दिया है, उन्होंने जिस धम्म का आविष्कार किया है, वह धम्म सदैव आधुनिक ही रहेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। भगवान बुद्ध और उनका धम्म अपने समय में भी आधुनिक ही था, इस बात के कई प्रमाण हमारे प्राचीन इतिहास में उपलब्ध हैं। प्राचीन पालि साहित्य हो या प्राचीन बौद्ध संस्कृत साहित्य हो वह साहित्य अपने समय का क्रांतिकारी साहित्य है, जनवादी साहित्य है, सामाजिक क्रांति का साहित्य है।
आधुनिक लोग भगवान बुद्ध के 'धम्म' को मानवतावादी मानते हैं। धर्म का इतिहास लिखने वाले सभी इतिहासकारों ने भगवान बुद्ध के धम्म को मानवतावादी कहा है। वे लोग बुद्ध के 'धम्म' को धर्म भी मानते हैं लेकिन मानवतावादी धर्म मानते हैं। पालि साहित्य में 'धम्म' शब्द बहुत व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है। भगवान बुद्ध के पटिच्चसमुप्पाद (कार्यकारण) के सिद्धांत से जानने योग्य नहीं है। भगवान बुद्ध के 'धम्म' का अर्थ शील, सदाचार, नैतिकता, मानवता, वास्तविकता से संबंधित है। इसलिए आज भी संसार के उपेक्षित, शोषित, प्रताड़ित लोग, दु:खी मानव समाज बुद्ध के धम्म की ओर आकर्षित हो रहे हैं।
भगवान बुद्ध का 'धम्म' आधुनिक युग की बहुत बड़ी विरासत है। बुद्ध के धम्म ने आज की विश्व संस्कृति को और सभ्यता को अपने धम्म और दर्शन से सुंदर कर दिया है। आज संपूर्ण संसार में औद्योगिकरण के कारण, यांत्रिकीकरण के कारण, उपभोक्तावाद के कारण, उपभोगवाद के कारण, अतिरिक्त उत्पादनवाद के कारण जहां हिंसा, अशांति, अमानवीयता, आंतकवाद, घृणा की प्रवृत्ति बढ़ रही है, धन प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है, अवसारवाद एवं स्वार्थभाव बढ़ रहा है, धनवाद बढ़ रहा है, ऐसे समय विश्व—संस्कृति और सभ्यता को नई राह, नई चेतना, नई प्रेरणा, नई आशा दिखाने का काम भगवान बुद्ध का धम्म ही कर सकता है। भगवान बुद्ध का संदेश न केवल विश्व मानवता के लिए है अपितु व्यक्तिगत उत्थान और सामाजिक उत्थान के लिए भी है। विश्व में सभ्य मानव समाज के निर्माण सहित मानव समाज को कुमार्ग, हिंसा, अशांति, उत्पीड़न, विनाश, अकुशल मार्ग से दूर रहने के लिए भी है।
भगवान बुद्ध का 'धम्म', उनके 'धम्म' और चिंतन का हर सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। भगवान बुद्ध का सामाजिक संदेश, सामाजिक दर्शन, चिंतन, आर्थिक विचार, राजनैतिक विचार आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने पहले थे। उनकी आधुनिक मानव समाज के लिए जो प्रेरणा है वह अन्य किसी धर्म और दर्शन में नहीं होगी। विश्व—संस्कृति और सभ्यता के हर स्तंभ पर भगवान बुद्ध के धम्म का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसलिए भगवान बुद्ध को विश्व का सबसे महान मानवतावादी चिंतक कहा जाता है और उनके धम्म को, उनके दर्शन को मानवतावादी धम्म और दर्शन कहा जाता है। जो विभिन्न बौद्ध विचार प्रवाह हैं उनमें भी भगवान बुद्ध का मानवतावादी चिंतन है। संसार में जहां—जहां भी बौद्ध धम्म पहुंचा वह अपने मानवतावाद के कारण, संयमित जीवन और शील सदाचार की शिक्षा के कारण।
मानव समाज में शांति की स्थापना की दृष्टि से और उनके सहअस्तित्व को स्वीकार करने की दृष्टि से भगवान बुद्ध का यह वचन बहुत ही महत्वपूर्ण है, वे कहते हैं —

सब्बे तसन्ति दण्डस्स, सब्बे भायन्ति मच्चुनो।
अत्तानं उपमं कत्वा, न हनै य न घातये।।[3]

अर्थात् सभी लोग दंड से भयभीत होते हैं, सभी को सदैव मरने का डर लगा रहता है। इसलिए अपने जैसा सभी को जानकर किसी को भी मारे नहीं और न मारने के लिए प्रेरित करें।

सब्बे तसन्ति दंडस्य, सब्बेसं जीवितं पियं।
अत्तानं उपमं कत्वा, न हने य न घातये।।[4]

अर्थात् सभी लोग दंड से घबराते हैं। इसलिए अपने जैसा दूसरों को समझकर किसी को भी नहीं मारना चाहिए।

सुखकामानि भूतानि, यो दण्डेन न विहिंसति।
अत्तनो सुखमेसानो, पेच्च सो न लभते सुखं।।[5]

सुख की भावना से जो सुख की इच्छा करने वाले प्राणी को दंड से मारता है, वह मरने के बाद सुख को प्राप्त नहीं करता है।

सुखकामानि भूतानि, यो दण्डेन न हिंसति।
अत्तनो सुखमेसाद्ये, पेच्च सो लभते सुखं।।[6]

सुख की भावना से जो सुख की इच्छा करने वाले प्राणी को डंडे से नहीं मारता, वह मरने के बाद सुख प्राप्त करता है।
अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के समान ही अन्य को मानना चाहिए। भेद भाव, ऊँच—नीच, घृणा सभी की सीमाएं टूट जाती हैं और सभी में एक—दूसरे के प्रति अपनत्व की भावना जागती है अर्थात् 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का समावेश होता है जिससे न सिर्फ स्वयं में परिवर्तन आता है अपितु विश्व में अपनत्व की भावना बढ़ती है —

अयं निज: परोवेति गणनां लघुचेतसाम्।
उदाचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

उसी प्रकार भगवान बुद्ध के दर्शन और चिंतन में शांति का और संयम का बहुत ही महत्व है। धम्मपद में कहा गया है

खन्ती परमं तपो तितिक्खा, निब्बाणं परमं वदन्ति बुद्धा।
नहि पब्बजितो परुपघाती, समणो होति परं विहठयन्तौ।।[7]

अर्थात् बुद्ध कहते हैं कि शांति और संयम परम तप है, निब्बान परम पद है। दूसरों का विनाश करने वाला प्रव्रजित नहीं हो सकता। दूसरों को दुखी करने वाला समण नहीं हो सकता। इस प्रकार भगवान बुद्ध ने शांति और निब्बान के महत्व को बताया है।
इनका धर्म दर्शन वेदों, उपनिषदों एवं गीता से प्रभावित है। गीता में क्रोध के दुष्प्रभाव के विषय में लिखा है

क्रोधद्भवति सम्मोह: सम्मोहात्स्मृति विभ्रम:।
स्मृतिभ्रंषाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणष्यति।।[8]

भगवान बुद्ध ने क्रोध को अकुशल धम्म, पाप धम्म कहा है। क्योंकि क्रोध के कारण व्यक्तिगत जीवन की शांति और सामाजिक जीवन की शांति भंग होती है। भगवान बुद्ध धम्मपद में कहते हैं —

अक्कोधेन जिने क्रोधं, असाधुं साधुना जिने।
जिने कदरियं दानेन, सच्चेन अलिकवादिनं।।[9]

मतलब क्रोध को अक्रोध से, बुराई को अच्छाई से, अनुदार को उदारता से और असत्य को सत्य से जीतना चाहिए।
उसी प्रकार भगवान बुद्ध कहते हैं —

न हि वेरेन वेरानि, सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो।।[10]

शत्रुता से शत्रुता कभी शांत नहीं होता है, अशत्रुता से शत्रुता शांत होती है, यही प्राचीन धम्म है। इस प्रकार की भगवान बुद्ध की शिक्षा है। जो बौद्ध धम्म और दर्शन का मूल आधार है। भगवान बुद्ध की इस प्रकार की शिक्षा से ही समाज में, देश में और संसार में समानता, विकास, शांति की स्थापना की जा सकती है और संसार में सहअस्तित्व की भावना, चेतना को जगाने के लिए ठोस विचारधारा की आवश्यकता है। बिना ठोस विचारधारा के वैचारिक, दार्शनिक और सैद्धांतिक स्पष्टता के समाज में, देश में, संसार में शांति और सहअस्तित्व की स्थापना करना आसान नहीं है। भगवान बुद्ध का दर्शन और चिंतन इसके लिए ठोस वैचारिक दार्शनिक और सैद्धांतिक आधार प्रस्तुत करता है।

पुरोहितवाद का खंडन और विरोध

भगवान बुद्ध ने सृष्टि के निर्माण में ईश्वरवाद को नकार कर पुरोहितवाद का खंडन किया है। भगवान बुद्ध के धम्म और दर्शन को अनीश्वरवादी, अनात्मवादी, अनित्यतावादी, प्रतित्यसमुत्पादवादी, परिवर्तनवादी कहा जाता है। भगवान बुद्ध का धम्म और दर्शन अनीश्वरवादी, अनात्मवादी, अनित्यवादी और प्रतित्यसमुत्पादवादी होने से निश्चित रूप से ही पुरोहितवाद को अस्वीकार करता है। पुरोहितवाद का जन्म ईश्वरवाद की संकल्पना से हुआ है। जो भी धर्म ईश्वरवादी है, उसमें पुरोहितवाद और पुरोहितवाद के कारण ही सामाजिक अनियमितता को ईश्वर निर्मित कहा गया है। लेकिन बुद्ध का धम्म ईश्वरवादी नहीं है, इसलिए इस धम्म में पुरोहितवाद के लिए कोई स्थान नहीं है। दीघनिकाल के ब्रह्मजाल सुत्त [11] में इस बात के स्पष्ट संकेत हैं। विनयपिटक में पुरोहितवाद के लिए कोई स्थान नहीं है। बुद्ध के धम्म और दर्शन में भिक्खु और भिक्खुणियों का स्थान पुरोहित का नहीं है, जैसे हिन्दू धर्म में ब्राह्मण—पुरोहित का है। बौद्ध भिक्खु और भिक्खुणियां एक अध्यापक और अध्यापिका की तरह हैं जो समाज को बुद्ध धम्म की शिक्षा देते हैं और अपनी मुक्ति का प्रयास भी करते हैं, अपने ज्ञान संवर्धन की साधना भी करते हैं अभ्यास भी करते हैं। भगवान बुद्ध का धम्म और दर्शन मानवतावादी होने का यह भी एक प्रमाण है कि उसमें पुरोहितवाद के लिए कोई स्थान नहीं है। भगवान बुद्ध का धम्म और दर्शन हर मनुष्य की बौद्धिक स्वतंत्रता का समर्थन करता है। धम्मपद के अत्तवग्ग में कहा गया है :

अत्ता हि अत्तना नाथो, को हि नाथो परोसिया।
अत्तनाव सुदन्तेन, नाथं लभति दुल्लभं।।[12]

अर्थात् मनुष्य अपना स्वामी स्वयं है, अपने को दमन करने वाला दुर्लभ स्वामित्व को पाता है। इस तरह धम्मपद के अत्तवग्गो में हर व्यक्ति को अपना स्वामी स्वयं कहा गया है और कुशल कर्म करने की प्रेरणा दी गई है।
धम्मपद में भिक्खुवग्ग में कहा गया है —

अत्ता हि अत्तना नाथो, अत्ता ही अत्तनो गति।
तस्मा संयमयत्तानं, अस्सं भद्दवं वाणिजो।।[13]

अर्थात् मनुष्य अपना स्वामी आप है, अपनी गति आप है, इसलिए अपने आप को उसी तरह संयत रखें जैसे व्यापारी अच्छे घोड़े को। इसमें भी भगवान बुद्ध ने हर व्यक्ति को स्वयं अपना स्वामी कहा है और संयमित जीवन जीने की प्रेरणा दी है। धम्मपद के कई वर्गों में संकलित बुद्ध वचनों से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हर मनुष्य को पुरोहितवाद के जाल से अपने आप को दूर रखना चाहिए।

अहिंसा का संदेश

भगवान बुद्ध को अहिंसावाद का सबसे प्रबल पक्षधर माना जाता है। उनके धम्म

और दर्शन में कहीं भी हिंसा का समर्थन नहीं है। संपूर्ण पालि तिपिटक साहित्य, बौद्ध संस्कृत साहित्य और अन्य सभी भाषाओं को बौद्ध साहित्य कभी भी हिंसा नहीं करता है। पालि तिपिटक साहित्य में और विशेष तौर पर सुत्तपिटक के दीघनिकाय, मज्झिमनिकाय, संयुक्तनिकाय आदि निकायों में संग्रहित सुत्तों में और खुद्दनिकाय के किसी भी ग्रंथ में हिंसा का समर्थन नहीं है। पालि की जातक कथाओं में भी हमें हिंसा का विरोध और अहिंसा का समर्थन दिखाई देता है। भगवान बुद्ध ने वैदिक यज्ञों में होने वाली हिंसा को भी हिंसा कहकर उसका विरोध किया है। उन्होंने सामाजिक उत्पीड़न को भी एक तरह से हिंसा ही कहा है। भगवान बुद्ध अहिंसा का समर्थन करते हैं, हिंसा का विरोध करते हैं और सामाजिक समानता स्थापित करने की शिक्षा देते हैं। धम्मपद में अहिंसा का समर्थन और हिंसा का विरोध इस तरह से किया गया है —

सब्बे तसन्ति दण्डस्य, सब्बे भायन्ति मच्चुनो।
अत्तानं उपमं कत्वा, न हने य न घातये।।[14]

अर्थात् सभी दंड से डरते हैं, सभी को मृत्यु से डर लगता है। इसलिए सभी को अपने जैसा जानकर न मारें, न मरवायें।

सब्बे तसन्ति दण्डस्य, सब्बेसं जीवितं पियं।
अत्तानं उपमं कत्वा, न हने य न घातये।।[15]

सभी दंड से डरते हैं, सभी को अपना जीवन प्रिय है। इसलिए सभी को अपने जैसा समझकर, न किसी को मारे और न मरवाये।
इन गाथाओं में बुद्ध की शिक्षा है कि प्रत्येक मनुष्य दूसरों को अपने जैसा समझे। भगवान बुद्ध सभी मानव समाज को यह शिक्षा देते हैं कि सभी को अपने जैसा समझो। इसमें मानवतावाद का सबसे बड़ा समर्थन है। भगवान बुद्ध का धम्म और दर्शन मनुष्य को केवल मनुष्य से ही प्रेम करने की शिक्षा नहीं देता बल्कि संसार में विद्यमान ओर सभी जीव प्राणियों से प्रेम करने की शिक्षा देता है। उन्होंने निसर्ग पर भी प्रेम करने के लिए कहा है। क्योंकि निसर्ग के सहारे ही सभी जीव—प्राणी फलित होते हैं। पर्यावरण की दृष्टि से भगवान बुद्ध के विचार आज भी प्रासंगिक है और भविष्य में भी प्रासंगिक रहेंगे।

अप्रमादी जीवन का समर्थन

भगवान बुद्ध का धम्म मानव समाज को शील, सदाचार, नैतिकता, मानव—कल्याण, सभी जीव प्राणियों के प्रति प्रेम, संयम, दया, मित्रता, करुणा, सहयोग, सेवा, सहअस्तित्व की शिक्षा देता है। भगवान बुद्ध के धम्म को सार रूप में कहा जाए तो —

सब्ब पापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित्त परियो दपणं, एतं बुद्धान सासनं।।[16]

अर्थात् जो भी पापमय अर्थात् अकुशल है उसे नहीं करना चाहिए। जो भी कुशल है उसको प्राप्त करना चाहिए। अपने चित्त को संयमित रखना चाहिए यही बुद्ध का धम्म है। धम्मपद के ही अप्पमाद वर्गो में अप्रमादी जीवन को सर्वोत्तम जीवन कहा गया है—

अप्पमादो अमतपदं, पमादो मच्चनुो पदं।
अप्पमत्ता न मीयन्ति, ये पमत्ता यथा मता।।[17]

अर्थात् अप्रमाद अमृत का पद है, प्रमाद मरण की अवस्था है, अप्रमादी (लोग) कभी मरते नहीं। लेकिन प्रमादी लोग मरे हुए के समान हैं। इसी प्रकार भर्तृहारी द्वारा विरचित इस लोक में आलस्य को मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु माना गया है —

आलस्यं ही मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपु:।
नास्त्युद्यमसमो बन्ध्र्यं कृत्वा नावसीदति।।[18]

भगवान बुद्ध की यह अप्रमादी होने की शिक्षा मानवी संस्कृति और सभ्यता के विकास के लिए बहुत ही मूल्यवान है। मनुष्य के अहित के कारण, उसके दुख के कारण, उसके विनाश का कारण प्रमादी होना ही है। प्रमाद से मनुष्य अंधा बन जाता है, प्रमाद से दुख भोगता है, दूसरों का अहित करता है। इसलिए प्रमाद को समाप्त किए बिना कोई भी व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता। इसलिए भगवान बुद्ध कहते हैं—

मा पमादमनुयुजेंथ, मा कामरतिसन्थवं।
अप्पमत्तो हि झायन्तमो, पप्पोति विपुलं सुखं।।[19]

अर्थात् प्रमाद मत करो, कामरत न रहो। प्रमादरहित होने पर चिंतन करने से विपुल सुख की प्राप्ति होती है। भगवान बुद्ध का यह उपदेश आज भी प्रासंगिक है। मानवी संस्कृति और सभ्यता की रक्षा के लिए अप्रमादी जीवन का बड़ा महत्व है।

शत्रुता न रखें।

भगवान बुद्ध की शिक्षा में प्रेम और मैत्री भावना को बड़ा महत्त्व है। उनकी शिक्षा में मनुष्य जीवन को सुखी और सुंदर बनाने का अमर दर्शन है। धम्मपद में कहा गया है कि —

अक्कोछि मं अवधि मं, अजिनि मं अहासि मे।
चे च तं उपन हन्ति, वेरं तंसं न सम्मति।।[20]

अर्थात् जो व्यक्ति यह सोचता है, 'मुझे अपशब्द कहा, मुझे मारा', 'मुझे हराया', 'मुझे लूट लिया' उस (व्यक्ति) का वैरभाव कभी शांत नहीं होता है। लेकिन जो व्यक्ति इस तरह से नहीं सोचता है, न विचार करता है, उसका मन शांत होता है।[21] वे कहते हैं—

न हि वेरेन वेरानि, सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो।।[22]

अर्थात् वैर भावना से वैर कभी शांत नहीं होता। अवैर से ही वैर भावना शांत होती है। यही आदिकाल से चला आ रहा धम्म है। इसमें भगवान बुद्ध ने वैर भावना को नष्ट करने की मानव समाज को अनमोल शिक्षा दी है। इसी प्रकार शास्त्रोक्त लोकानुसार सनातन धर्म की बात कही गई जिसमें यदि भौतिक सुख दूसरों के पास हैं तो वे दु:ख का कारण हैं और अपने पास हैं तो सुख का कारण —

सर्व परवषं दु:खं सर्वमात्मवषं सुखम्।
एतत् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदु:खयो:।।

भगवान बुद्ध ने मानव समाज को मानवीय जीवन मूल्यों की शिक्षा दी है, न किसी काल्पनिक ईश्वरवाद को अपनाने की। उनके धम्म का मूल ही नैतिकता, सदाचार है। उनके चिंतन का केन्द्र मनुष्य ही है। मनुष्यमान का कल्याण ही उनके धम्म और दर्शन का अंतिम उद्देश्य है। भारत में बुद्ध धम्म शोषित वर्ग का धम्म हो गया है, सामान्य लोगों को धम्म हो गया है। बुद्ध धम्म दलितों, शोषितों, सामान्यजनों के उत्थान का धम्म हो गया है। यही बुद्ध धम्म की विशेषता है।
अत: यह कहा जा सकता है कि भगवान बुद्ध ने जो 'धम्म' की व्यापक, विस्तृत एवं वैश्विक परिभाषा दी है वह आज भी प्रासंगिक है और उनके द्वारा उपदेशित, उच्चरित एवं प्रसारित उपदेश आज भी जनमानस के लिए उतने ही उपयोगी हैं, जितने उस समय थे। उनका अवतरण सृष्टि की एक अद्भुत घटना कही जा सकती है। जिस प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने अवतार लिया और अपने गीता के उपदेशों से न सिर्फ अर्जुन को उपदेशित किया अपितु उसका मुख्य उद्देश्य कलिकाल अर्थात

वर्तमानकाल के जनमानस को सही मार्ग दिखाना था। यहां पर भी भगवान बुद्ध इसी प्रकार कहते हैं कि सभी जन मेरे द्वारा उपदेशित उपदेशों को मानकर, समझकर एवं आत्मसात कर अपने जीवन को साकार करें एवं मोक्ष प्राप्ति का प्रयास करें। गीता में भी भगवान श्री कृष्ण कहते हैं —

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।[23]

संदर्भ

1. श्रीमद्भगवद्गीता — 1.1.
2. श्रीमद्भगवद्गीता — 4.7.
3. धम्मपद—दण्डवग्ग, 129.
4. धम्मपद—दण्डवग्ग, 130.
5. धम्मपद—दण्डवग्ग, 131.
6. धम्मपद—दण्डवग्ग, 132.
7. धम्मपद—बुद्धवग्ग, 184.
8. श्रीमद्भगवद्गीता — 2.63.
9. धम्मपद—कोध्वग्ग, 223.
10. धम्मपद—यमकवग्ग,05.
11. ब्रह्मजाल सुत्त, दीघनिकाय 1/1.
12. अत्तवग्गो, धम्मपद 12/4 (गाथा 160).
13. भिक्खुवग्गो, धम्मपद 25/21 (गाथा 380).
14. दण्डवग्गो, धम्मपद 10/1 (गाथा 129).
15. दण्डवग्गो, धम्मपद 10/2 (गाथा 130).
16. बुद्धवग्गो, धम्मपद 14/5 (गाथा 183).
17. अप्पमादवग्गो,धम्मपद 2/1 (गाथा 21).
18. श्रृंगार, वैराग्य—नीति शतकत्रयं, पुस्तक मंदिर, मथुरा, द्वितीय संस्करण, पृ. 29.
19. अप्पमादवग्गो, धम्मपद 2/7 (गाथा 27).
20. यमकवग्गो, धम्मपद 1/3 (गाथा 3).
21. यमकवग्गो, धम्मपद 1/4 (गाथा 4).
22. यमकवग्गो, धम्मपद 1/5 (गाथा 5).
23. श्रीमद्भगवद्गीता, 16.66.